हीरे की अंगूठी

डॉ. विजय शर्मा
326, न्यू सीतारामडेरा, एग्रीको,
जमशेदपुर - 831009,
मो. 930381718

ऋतुपर्ण घोष बहुमुखी प्रतिभा के व्यक्ति थे। वे एक साथ फिल्म निर्देशक, पटकथा लेखक, अभिनेता, क्रियेटिव आर्टिस्ट, टीवी शो संचालक, संपादक और बहुत कुछ थे। 31 अगस्त 1963 को जन्मे ऋतुपर्ण घोष ने पढ़ाई तो इकोनॉमिक्स (जादवपुर युनिवर्सिटी) विषय ले कर की लेकिन उन्होंने अपने पेशे का प्रारंभ विज्ञापन फिल्मों में काम करने से किया। शुरु में वे विज्ञापन एजेंसी (एइस्पॉन्स इंडिया एडवर्टाइजिंग एजेंसी) में क्रियेटिव आर्टिस्ट के रूप में काम कर रहे थे। अपने जमाने में वे कलकत्ता के जाने-माने कॉपीराइटर थे। विज्ञापनों में वे अपनी सफल एक लाइनों तथा स्लोगन के लिए जाने जाते थे। पिछली सदी के अस्सी के दशक में बंगाल में पूरे भारत के इंग्लिश और हिन्दी के विज्ञापनों के बांग्ला अनुवाद का चलन था। उन्होंने 'शरद सम्मान', 'बोन्गो जीबोनेर अन्गो', 'बोरोलीन', 'फूटी' पर काम किया। 1990 में उन्होंने अपनी एड एजेंसी, टेले-रिस्पॉन्स कायम की, यह रिस्पॉन्स एजेंसी का ही एक अंग था। और इसके तहत उन्होंने दूरदर्शन के लिए वंदे मातरम वृतचित्र बनाया।

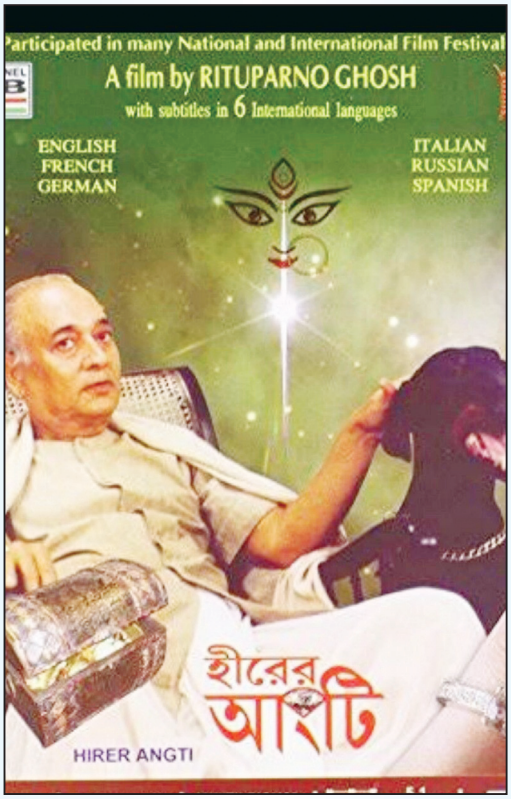

कला की दुनिया में वे अद्‌भुत थे। कला उन्हें विरासत में मिली थी। उनके पिता सुनील घोष स्वयं डॉक्यूमेंट्री फिल्म बनाने वाले तथा पेंटर थे। मुख्य रूप से बांग्ला भाषा में सिनेमा बनाने वाले इस कुशल फिल्म निर्देशक ऋतुपर्ण घोष ने बॉलीवुड में भी अपनी प्रतिभा के लोहे मनवाए। ओ हेनरी की प्रसिद्ध कहानी 'गिफ्ट ऑफ द मैगी' को हिन्दी में रूपांतरित कर 2004 में मात्र 17 दिन में शूट कर 'रेनकोट' जैसी बेहतरीन फिल्म उन्होंने दर्शकों को दी। यह उनकी पहली हिन्दी फिल्म है। ऐश्वर्या राय, अजय देवगन की जोड़ी के अभिनय को समीक्षकों की भी भूरि-भूरि प्रशंसा मिली। कुल जमा तीन अभिनेता (अजय देवगन, ऐश्वर्या राय तथा अन्नू कपूर) और एक कमरे में चलती इस फिल्म को सर्वोत्तम फीचर फिल्म का राष्ट्रीय पुरस्कार प्राप्त हुआ। बाद में इसका इंग्लिश रूपांतरण भी हुआ। आज के युग में प्रेम और उसकी यातना का इतना सुंदर चित्रण कदाचित ही देखने को मिलता है। बिना मेकअप, गानों-नाच के बिना भी ऐश्वर्या राय प्रभावित करती हैं। जीवन में यातना का फिल्मांकन ऋतुपर्ण घोष की एक विशेषता है।

ऋतुपर्ण घोष बहुमुखी प्रतिभा के व्यक्ति थे। उन्होंने विज्ञापन एजेंसी में काम किया अपनी विज्ञापन एजेंसी बना कर डॉक्यूमेंट्रीज बनाई। टीवी पर 'ईबंग ऋतुपर्ण तथा 'घोष एंड कं. चैट शो चलाए, 'गनेर ऑपेरा की स्क्रिप्ट लिखी। फिल्में बनाई। वे 1997 से 2004 तक 'आनंदलोक' पत्रिका के संपादक थे, साथ ही एक अन्य पत्रिका 'रोबर' (संगबाद प्रतिदिन) के 2006 से अपनी मृत्यु तक संपादक रहे। उन्होंने न केवल फिल्में बनाई बल्कि फिल्मों में अभिनय भी किया। ऋतुपर्ण घोष ने सर्वप्रथम 2003 में एक उड़िया फिल्म में अभिनय की। फिल्म का नाम है, 'कथा दैथिली मा कु' जिसका निर्देशन हिमांशु परिजा ने किया है। उन्होंने 2011 में दो बांग्ला फिल्मों, अरेक्ति प्रेमेर गल्प (निर्देशक कौशिक गांगुली) तथा 'मेमोरीज इन मार्च' (निर्देशक संजय नाग) में अभिनय किया। दोनों ही फिल्में समलैंगी संबंधों को चित्रित करती हैं। 2012 में उन्होंने दो अन्य बांग्ला फिल्मों, 'चित्रांगदा' तथा 'जीवन स्मृति' में काम किया। दोनों फिल्में रवींद्रनाथ टैगोर से जुड़ी हुई हैं। टैगोर की कहानी 'चित्रांगदा' पर उनकी इसी नाम से बनाई फिल्म को उनकी मृत्योपरांत नेशनल फिल्म एवार्ड प्राप्त हुआ।

बच्चों के लिए बहुत कम फिल्में बनती हैं। बहुत कम फीचर फिल्म निर्देशक बच्चों के लिए फिल्म बनाते हैं। ऋतुपर्ण घोष ने सर्वप्रथम 1992 में बच्चों के लिए एक फिल्म 'हीरेर अंगटी' (हीरे की अंगूठी) बनाई। अपनी विज्ञापन प्रसिद्धि के कारण वे बंगाल में एक जाना पहचाना नाम थे। अतः उनकी इस फिल्म को खूब सराहा गया मगर विडम्बना यह हुई कि इसे वितरक न मिले और यह सिनेमाघरों में नहीं दिखाई गई। आज इसे कल्ट का दर्जा दिया जाता है। आज इसे लोग देखते-दिखाते हैं। इस फिल्म की कहानी शीर्षेंदु मुखोपाध्याह की इसी नाम की कहानी पर आधारित है। पूरी फिल्म रंगों का इंद्रधनुष है। दुर्गा की प्रतिमा के चमकीले रंग, बंगाल की प्रकृति का हरा-भरा रंग, स्त्री-